E-LECTURE
UNIT 5
HISTORY OF INDIA (650-1206 A.D.)

Dr. NANDANI PATHAK
SOS ARCHAEOLOGY DEPARTMENT
18.04.2020

पाण्ड्य राजवंश

तमिल प्रदेश का तीसरा राज्य पाण्ड्यों का था जिसमें प्रारम्भ में तिनेवेली, रामनाड तथा मदुरा का क्षेत्र सम्मिलित था। पाण्ड्यों इतिहास भी अत्यन्त प्राचीन है। रामायण, महाभारत, कौटिल्य के अर्थशास्त्र, अशोक के लेखों के साथ-साथ यूनानी-रोमन (क्लासिकल) विवरणों में भी इनका उल्लेख प्राप्त होता है। खारवेल के हाथीगुम्फा लेख से पता चलता है कि उसने अपने शासन के बारहवें वर्ष में पाण्ड्य नरेश को पराजित कर उससे मुक्तामणियों का उपहार प्राप्त किया था।

अध्ययन के सुविधा के लिये पाण्ड्य वंश का इतिहास तीन चरणों में विभाजित किया जा सकता है

1. संगमकालीन पाण्ड्य राज्य।

2. कंड्गोन (छठी शताब्दी ईस्वी) द्वारा स्थापित प्रथम पाण्ड्य साम्राज्य।

3. सुन्दरपाण्ड्य द्वारा तेरहवीं शती में स्थापित द्वितीय पाण्ड्य साम्राज्य।

तमिल भाषा की प्राचीनतम रचना 'संगम साहित्य' से पाण्डय वंश के प्राचीन इतिहास पर कुछ प्रकाश पड़ता है। संगम साहित्य में कुछ पाण्ड्य राजाओं के नाम प्राप्त होते हैं, जैसे-नेड्डियोन, नेडिडुंजेलियन आदि। परन्तु उनका क्रमबद्ध इतिहास नहीं मिलता।

प्रथम पाण्ड्य साम्राज्य : कंडुगोन

छठी शताब्दी के अन्तिम चरण में पाण्ड़यों का कंडुगोन के नेतृत्व में उत्कर्ष हुआ। उसने कलभ्र नामक विदेशी जाति को परास्त कर अपना शासन प्रारम्भ किया। इस प्रकार प्रथम पाण्ड्य साम्राज्य की स्थापना हुई। उसके शासन काल (590-620 ई०) की घटनाओं के विषय में हमें बहुत कम ज्ञात है। उसने कलभ्रों की शक्ति का अन्त कर पाण्ड्य शक्ति का पुनरुद्धार किया। वेल्विकुडी लेख में उसकी इस सफलता का उल्लेख मिलता है। यह भी बताया गया है कि उसने कई अन्य राजाओं पर विजय प्राप्त की थी, किन्तु इनका विस्तृत विवरण उपलब्ध नहीं होता।

मारवर्मन् अवनिशलमणि-यह कंडगोन का पुत्र था जिसने 620 ई० से लेकर 645 ई0 तक राज्य किया। इसके शासन की घटनाओं के विषय में हमारी कोई जानकारी नहीं है। अधिक से अधिक यही कहा जा सकता है कि उसने अपने पैतृक राज्य को सुरक्षित बनाये रखा।

जयन्तवर्मन्-यह पाण्ड्य वंश का तीसरा शासक हुआ। उसने चेर राज्य की विजय की तथा इसके उपलक्ष्य में 'वानवन' की उपाधि धारण की। यह चेर राजाओं की उपाधि थी। उसने 645 ई0 से 670 ई0 के लगभग तक शासन किया।

अरिकेसरी मारवर्मन्-यह जयन्तवर्मन् का पुत्र तथा उत्तराधिकारी था जो 670 ई० में अपने पिता की मृत्यु के बाद राजा बना। वह एक प्रतापी शासक था। वेल्विकुडी लेख से पता चलता है कि उसने केरलों को पालि, नेल्वेलि और सेन्निलम् के युद्धों में हराकर परवस तथा कुरुनाडु को अपने अधिकार में ले लिया था। इन स्थानों का समीकरण निश्चित नहीं हो पाया है। पल्लवों के विरुद्ध उसने चालुक्य विक्रमादित्य प्रथम से सन्धि कर ली तथा पल्लव नरेश परमेश्वरवर्मन् को परास्त किया।

अरिकेसरी मारवर्मन् ने 700 ई0 तक शासन किया।

कोच्चद्वैयन रणधीर-यह अरिकेसरी मारवर्मन् का पुत्र था तथा 700 ई० में पाण्ड्य वंश की गद्दी पर बैठा। यह भी एक शक्तिशाली राजा था। वेल्विकुडी लेख से सूचित होता है कि उसने मंगलापुरम् के महारथों (मराठों) को जीता था। शास्त्री ने

इस स्थान का समीकरण मंगलोर से स्थापित किया है। इस प्रकार उसने मंगलोर तक के प्रदेश की विजय की तथा अपने राज्य का विस्तार कोंगू प्रदेश तक किया। उसने आय नामक एक पहाड़ी प्रदेश के सरदार को भी जीता जो तिरुनेल्वेलि तथा त्रावनकोर के बीच शासन करता था। उसे मरुदूर नामक स्थान पर हराकर कोच्चद्वैयन ने अपने अधिकार में ले लिया।

कोच्चद्वैयन ने संभवतः 730 ई0 तक राज्य किया।

मारवर्मन् राजसिंह प्रथम-कोच्चडैयन का उत्तराधिकारी मारवर्मन् राजसिंह प्रथम बना। वह भी अपने पिता के समान एक शक्तिशाली राजा था। उसके समय में पल्लव शासक नन्दिवर्मन् द्वितीय तथा उसके चचेरे भाई चित्रमाय में गद्दी के लिये युद्ध छिड़ा। मारवर्मन् ने चित्रमाय का साथ दिया। वेल्विकुडी लेख से पता चलता है कि उसने पल्लवों को करुमंडे, मणैकुरिचि, कोदुम्बालूर, तिरुमंगै, पूवलूर आदि अनेक युद्धों में पराजित किया तथा पल्लव सेना के बहुत से हाथियों और घोड़ों को छीन लिया। यह भी पता चलता है कि उसने नन्दिवर्मन् को नन्दिग्राम में बन्दी बना लिया। किन्तु पल्लव सेनापति उदयचन्द्र ने उसे मुक्त करा लिया। पल्लवों के विरुद्ध अपनी सफलता के उपलक्ष्य में राजसिंह ने 'पल्लव भंजन' की उपाधि धारण की। उसके शासन काल में कोगू प्रदेश में विद्रोह हुआ जिसे राजसिंह ने सफलतापूर्वक दबा दिया। इसके बाद पेरियलूर के युद्ध में अपने शत्रुओ को पराजित कर उसने कावेरी नदी पार की तथा मलकोगम् (त्रिचनापल्ली तथा तंजोर की सीमा पर स्थित) के ऊपर अपना अधिकार कर लिया। यहाँ का राजा मालवराज पराजित हुआ तथा उसने अपनी कन्या का विवाह राजसिंह के साथ कर दिया। राजसिंह के विरुद्ध गंगनरेश श्रीपुरुष ने चालुक्य नरेश कीर्तिवर्मन् द्वितीय (744-45 ई०) के साथ मिलकर एक मोर्चा बनाया। किन्तु 750 ई० के लगभग राजसिंह ने गंगों तथा चालुक्यों की सम्मिलित सेनाओं को वेणवई में, परास्त कर दिया। बाद में गंगनरेश ने उससे सन्धि कर ली तथा अपनी कन्या का विवाह उसके पुत्र जटिलपरान्तक के साथ कर दिया। यह राजसिंह की उल्लेखनीय सफलता थी।

वरगुण प्रथम-राजसिंह के बाद उसका पुत्र वरगुण प्रथम (765-815 ई0) राजा हुआ। उसे नेडुञ्जडैयन तथा जटिलपरान्तक के नाम से भी जाना जाता है। वह अपने

वंश का एक महान पराक्रमी नरेश सिद्ध हआ। उसके कई लेख मिलते है जो उसके शासन के तीसरे वर्ष से सैंतालीसवें वर्ष तक के हैं। इनमें सबसे महत्वपूर्ण वेल्विकुडी अनुदान पत्र है। इससे उसके पूर्वजों का इतिहास भी पता चलता है। इससे सूचित किया जाता है कि वरगुण ने तंजोर के समीप पेण्णागडम् के युद्ध में पल्लव शासक नन्दिवर्मन् द्वितीय तथा उसके सहयोगी आयवेल (जो तिरुनेल्वेलि और ट्रावनकोर के बीच राज्य करता था) की सम्मिलित सेनाओ को पराजित कर दिया। मद्रास संग्रहालय में सुरक्षित दानपत्रों से विदित होता है कि वरगुण ने तगडूर के शासक आदिगैमान को पुगलियूर, अयियूर तथा आटूरवेलि के युद्धों में पराजित किया था। नीलकण्ठ शास्त्री का विचार है कि वरगुण के विरुद्ध कोंगू, केरल, आडिगैमान आदि राज्यों ने मिलकर एक मोर्चा बनाया था। किन्तु उसने बारी-बारी से सबको पराजित कर दिया। उसका समस्त कोंगू प्रदेश के ऊपर अधिकार हो गया। वेलूर, विलिनम्, पुलिगिरे आदि जीतते हुए उसने वेणाद के ऊपर अधिकार कर लिया। पल्लव राज्य पर आक्रमण कर उसने अपना शिविर इडुवै (तंजोर जिला) में स्थापित किया। कावेरी नदी के दक्षिण के सम्पूर्ण प्रदेश पर उसने अपना अधिकार जमा लिया। सलेम तथा कोयंबटूर पर भी उसका अधिकार था।

इस प्रकार वरगुण ने पाण्ड्य राज्य को एक विशाल साम्राज्य में परिणत कर दिया। विजेता होने के साथ-साथ वह कला और साहित्य का संरक्षक था। कांची वायप्पेरूर में उसने विष्णु का एक विशाल मन्दिर बनवाया तथा कई शैव मन्दिरों के लिये दानदि दिया। वह एक विद्या-प्रेमी तथा विद्वानों का संरक्षक सम्राट भी था और उसने 'पंडितवत्सल' की उपाधि ली थी।

श्रीमार श्रीवल्लभ-वरगुण का पुत्र तथा उत्तराधिकारी श्रीमारश्रीवल्लभ (815-862 ई०) हुआ। वह एक पराक्रमी तथा साम्राज्यवादी शासक था। उसकी उपलब्धियों का विवरण हम दलवयपुरम् तथा बृहशिन्नमनूर के लेखों और महावंश से प्राप्त करते हैं। बृहत्शिन्नमनूर लेख से पता चलता है कि उसने कूण्णूर, विलिनम् तथा सिंहल को जीता और गंग, पल्लव, चोल, कलिंग, मगध आदि राजाओं के संघ को 'कुम्बकोनम् के युद्ध में पराजित कर दिया। किन्तु पल्लवों के विरुद्ध उसकी सफलता अस्थायी रही। पल्लव नरेश दन्तिवर्मन् के शासन के अन्त में उसके पुत्र नन्दिवर्मन् तृतीय ने पाण्ड्यों

के विरुद्ध गंग, चोल, राष्ट्रकूट आदि को संगठित कर एक मोर्चा तैयार किया। इस मोर्चे ने तेल्लारु के युद्ध में पाण्ड्य नरेश श्रीमार को पराजित कर दिया। किन्तु इससे पाण्ड्यों की विशेष क्षति नहीं हुई तथा तंजोर का क्षेत्र उनके अधिकार में बना रहा।

महावंश से पता चलता है कि श्रीमार ने लंका के राजा सेन प्रथम पर आक्रमण किया। महातलित के यद्ध में लंका का राजा पराजित हुआ तथा उसने भागकर मलय देश में शरण ली। पाण्डयों का लंका की राजधानी पर अधिकार हा गया तथा वे अपने साथ अतुल सम्पत्ति लेकर वापस लौटे। बाद में सेन प्रथम ने उसकी अधीनता मान ली तथा उसका राज्य वापस कर दिया गया।

सेन प्रथम के बाद सेन द्वितीय (851-885 ई०) लंका का राजा बना। उसे श्रीमार द्वारा अपने देश की पराजय तथा लूट की बात बराबर खलती रही। संयोगवंश उसे बदला लेने का एक अवसर प्राप्त हो गया। पाण्ड्य देश का एक असंतुष्ट राजकुमार माया पाण्ड्य लंका गया तथा उसने सेन द्वितीय से श्रीमार के विरुद्ध सहायता मांगी। फलस्वरूप लंका नरेश ने माया पाण्ड्य तथा पल्लवों के साथ मिलकर पाण्ड्य राज्य के ऊपर आक्रमण कर दिया। उसने राजधानी मदुरा को घेर लिया। श्रीमार उस समय अपनी राजधानी के बाहर था। आक्रमण की सूचना पाकर वह वापस लौटा किन्तु वह आक्रमणकारियों का सामना नहीं कर सका तथा युद्ध क्षेत्र से भाग गया। बताया गया है कि उसने अपनी पत् साथ आत्महत्या कर लिया। लंका नरेश ने उसकी राजधानी को खूब लूटा तथा श्रीमार के पुत्र वरगण द्वितीय को राजगद्दी पर बैठाकर स्वदेश लौट गया।

इस प्रकार यद्यपि श्रीमार का अन्त दुखद रहा तथापि उसने अपने जीवनकाल तक अपना साम्राज्य पूर्णतया सुरक्षित बनाये रखा।

वरगुण द्वितीय-यह श्रीमार का पुत्र था तथा उसकी मृत्यु के बाद पल्लव और सिंहल के राजाओं द्वारा पाण्ड्य साम्राज्य की गद्दी पर आसीन किया गया था। उसने पल्लवों की अधीनता में शासन करना स्वीकार कर लिया।

वरगुण को प्रारम्भ में चोलनरेश विजयालय से युद्ध करना पड़ा। 850 ई0 के लगभग विजयालय ने तंजोर पर अधिकार कर लिया। वरगुण ने पल्लव नृपत्तुंग की सहायता से विजयालय पर आक्रमण किया। उसकी सेना कावेरी नदी तट पर स्थित इडवै नामक स्थान तक जा पहुँची। किन्तु इसी बीच पल्लव वंश के नृपत्तुंग तथा

अपराजित में सिंहासन के लिये संघर्ष छिड़ गया। वरगुण ने नृपत्तुंग का पक्ष लिया तथा अपराजित के साथ सिंहल, चोल तथा पश्चिमी गंग के राजा थे। 880 ई० के लगभग श्रीपुरम्बियम् के युद्ध में अपराजित को सफलता मिली तथा वरगुण पराजित किया गया। इससे पाण्ड्यों की शक्ति निर्बल पड़ गयी तथा उनका राज्य कावेरी के दक्षिण में सिमट गया। शेष भाग चोलों की अधीनता में चला गया। इसी समय वरगुण के छोटे भाई वीरनारायण ने उसे गद्दी से हटाकर सिंहासन पर अधिकार कर लिया।

परान्तक वीरनारायण-यह वरगुण द्वितीय का छोटा भाई था जो उससे कुछ शक्तिशाली सिद्ध हुआ। दलवयपुरम् लेख से पता चलता है कि उसने खरगिरि के पास उग्र नामक राजा को पराजित किया, पेण्णागदम् को ध्वस्त किया तथा कोंगू में युद्ध किया। नीलकण्ठ शास्त्री का विचार है कि उसका कोगू में चोलो से युद्ध हुआ किन्तु उसे सफलता नहीं मिली और चोलों का वहाँ अधिकार हो गया।

परान्तक ने संभवतः 900 ई0 तक राज्य किया। लेखों में उसे कई मन्दिरों का निर्माण करवाने तथा ब्राह्मणों को भूमि दान में देने का उल्लेख किया गया है।

मारवर्मन् राजसिंह द्वितीय-यह परान्तक वीरनारायण का पुत्र तथा उत्तराधिकारा हुआ। प्रारम्भ में कुछ युद्धो में उसे सफलता मिली किन्तु अन्ततः चोलों से 'पराजित होना पड़ा। चोलों ने पाण्ड्यों की राजधानी मदुरा पर अधिकार कर लिया। राजसिंह ने लंका के शासक कस्सप पंचम से सहायता ली। दोनों ने सम्मिलित रूप से चोलो के विरुद्ध अभियान किया। किन्तु उदयेन्दिरम् के लेखों से पता चलता है कि इस युद्ध में पाण्ड़यों के बहत अधिक सैनिक, हाथी तथा घोड़े नष्ट हो गये। राजसिंह युद्ध-भूमि से भाग गया। उसके अन्तिम दिनों के विषय में हमे ज्ञात नहीं है।

वीर पाण्ड्य-राजसिंह द्वितीय का पुत्र तथा उत्तराधिकारी वीर पाण्ड्य बना। वह कुछ शक्तिशाली राजा था। 949 ई0 में उसने चोल शासक गंडरादित्य को तकोलम के यद्ध में पराजित किया तथा अपनी स्वतंत्रता घोषित कर दी। कि उसकी सफलता स्थायी नहीं रही। गडरादित्य के तीसरे उत्तराधिकारी सुन्दरचोल परान्तक द्वितीय ने पाण्ड्यो की शक्ति को कुचलने के लिये सैनिक अभियान किया। लंका के शासक महिन्द चतुर्थ ने पाण्ड्यो की सहायता की। किन्तु चेबूर के युद्ध में चोल सेना ने वीर पाण्ड्य को बुरी तरह पराजित किया तथा संभवतः वह युद्ध-भूमि में मार डाला गया। इसके

साथ ही पाण्ड्य वंश की स्वाधीनता का लगभग दो-तीन सौ वर्षों तक के लिये अन्त हुआ तथा उन्हें चोलो की अधीनता स्वीकार करनी पड़ी।

बारहवी शताब्दी तक पाण्ड्य राज्य पर चोलो का आधिपत्य बना रहा तथा इस बीच पाण्ड्य शासक चोल राजाओ की अधीनता में शासन करते रहे। इस बीच पाण्ड्य शासको द्वारा स्वतन्त्रता प्राप्त करने का यदा-कदा प्रयास किया गया, किन्तु उन्हें सफलता नहीं मिली। 994 ई० के लगभग चोल शासक राजराज प्रथम ने पाण्ड्य राज्य पर आक्रमण कर वहाँ के राजा अमरभुजंग को बन्दी बना लिया तथा राज्य पर अपना अधिकार कर लिया। उसके उत्तराधिकारी राजेन्द्र चोल के विषय में पता चलता है कि उसने भी पाण्ड्य राज्य को जीता तथा अपने पुत्र सुन्दरचोल को वहाँ का उपराजा बनाया था। राजाधिराज ने वीरकेरलन तथा सुन्दरपाण्ड्य का दमन किया और चोल वीर राजेन्द्र के समय (1062-1067 ई०) मे पाण्ड्य राजा वीरकेसरी की हत्या कर दी गयी। इस प्रकार पाण्ड्य शासकों को शक्तिशाली चोलो के सम्मुख सदा ही नतमस्तक होना पड़ा।

द्वितीय पाण्ड्य साम्राज्य-तेरहवी शती से हम पाण्ड्यों की स्थिति में कुछ सुधार पाते है। इस समय इस वंश के शासक सुन्दरपाण्ड्य (1216-1238 : ई0) ने अपने वंश की शक्ति का पुनरुद्धार किया। उसने चोल शासको-कुलोत्तुंग तृतीय तथा राजराज तृतीय-को पराजित किया और विस्तृत भूभाग पर शासन किया। किन्तु उसके उत्तराधिकारी मारवर्मन् सुन्दर पाण्ड्य तृतीय (1238-1251 ई०) राजेन्द्र चोल ततीय ने पुनः जीत कर अपनी अधीनता में रहने के लिये बाध्य किया। परन्तु जटावर्मन् सुन्दर पाण्ड्य प्रथम (1251-68 ई०) ने पुनः अपने वंश की स्वाधीनता प्राप्त कर ली। वह पाण्ड्य वंश का सर्वाधिक शक्तिशाली राजा था जिसने चेर, होयसल राजाओं को जीता तथा चोल शक्ति का पूर्ण विनाश किया। उसने उत्तरी सिंहल की भी विजय की, काञ्ची पर अधिकार कर लिया तथा काकतीय नरेश गणपति को भी हरा दिया। उसने चोल तथा कोग दोनों राज्यों को अपने राज्य में मिला लिया तथा मैसूर के अतिरिक्त सम्पूर्ण दक्षिणी भारत पर शासन किया। विजित प्रदेशों से उसे अतुल सम्पत्ति प्राप्त हुई जिसका उपयोग उसने श्रीरङ्गम् तथा चिदम्बरम् के मन्दिरों को भव्य एवं सुन्दर बनाने में किया।

जटावर्मन् के बाद मारवर्मन् कुलशेखर (1268-1310 ई0) राजा बना। उसने होयसल नरेश रामनाथ तथा राजेन्द्र चोल तृतीय दोनों को 1279 ई० में पराजित किया। कुलशेखर चोल प्रदेश तथा रामनाथ द्वारा शासित होयसल के तमिल जिलो का एकछत्र शासक बन बैठा। केरल में उसने एक विद्रोह का दमन किया। उसने अपने मन्त्री आर्यचक्रवर्ती के नेतृत्व में एक सेना सिंहल पर आक्रमण करने के लिए भेजी। वहाँ का शासक भवनायकबाह परास्त हआ तथा 20 वर्षों तक सिहल पाण्ड्य राज्य का एक प्रान्त बना रहा। अपने राज्य-काल के अन्त तक कुलशेखर ने अपने राज्य को अक्षुण्ण बनाये रखा। उसका शासन-काल आर्थिक दृष्टि से समृद्धि का काल रहा। उसके समय (1293 ई0) में वेनिस का प्रसिद्ध यात्री मार्कोपोलो पाण्ड्य देश की यात्रा पर आया था। वह कुलशेखर के सुशासन एवं उसके राज्य की समृद्धि की काफी प्रशंसा करता है। उसके अनुसार इस राज्य में बढ़िया किस्म के मोती और जवाहरात मिलते थे। यहाँ का व्यापार-वाणिज्य अत्यधिक विकसित था तथा राज्य की ओर से विदेशी व्यापारियों तथा यात्रियों को काफी सुविधायें प्रदान की जाती थी। इस राज्य का कैल (कायल) नामक नगर ऐश्वर्य एवं वैभव से परिपूर्ण था। यहाँ के शासक के पास परिपूर्ण कोष तथा विशाल सेना थी। कुलशेखर की मृत्यु के बाद उसके दो पुत्रो जटावर्मा सुन्दरपाण्ड्य तृतीय तथा वीरपाण्ड्य के बीच गद्दी के लिये संघर्ष छिड़ गया। इसमें वीर पाण्ड्य विजयी हुआ तथा उसने राजगद्दी पर अधिकार कर लिया। किन्तु जटावर्मा इस पराभव को सहन न कर सका तथा उसने अपने भाई को दण्ड देने के लिये अलाउद्दीन खिलजी से सहायता मांगी। अलाउद्दीन तो अवसर की प्रतीक्षा में था। उसने 1310 ई0 में अपने सेनापति मलिक काफूर को पाण्ड्य राज्य पर आक्रमण करने को भेजा। आक्रमणकारियों ने मदुरा को लूटा तथा ध्वस्त कर दिया। मलिक काफूर अपने साथ भारी सम्पत्ति लेकर दिल्ली लौट गया। इसके बाद पाण्डय राज्य की स्थिति निर्बल पड़ गयी। चौदहवीं शती के प्रारम्भ में केरल के राजा रविवर्मन् ने वीरपाण्ड्य तथा सुन्दरपाण्ड्य दोनों को पराजित किया। तुगलक शासन में भी पाण्ड्य राज्य पर तुकों ने आक्रमण किये तथा लूटपाट मचाया। कुछ समय के लिये इसे दिल्ली सल्तनत का अंग बना लिया गया। इस प्रकार क्रमशः पाण्डय राज्य का पतन हो गया।